Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVIII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

गोंड जनजाति के विशेष संदर्भ में

श्रीमती सोनाली ठाकुर*

* सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र) शासकीय आदर्श महाविद्यालय, हरदा (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – भारत के हृदय प्रदेश मध्य प्रदेश को जनजाति प्रदेश भी कहा जाता है यहां की जनजाति तीन भागों में बटी हुई है पहली गोंड दूसरी जनजाति भील व तीसरे वर्ग में कोल वह मुंडा जनजाति पाई जाती है। मध्य प्रदेश की प्रमुख जनजातियों में पहली जनजाति है गोंड व दूसरी जन जाति भील है।

शब्द कुंजी – जनजाति,गोंड,भील,कोल व मुंडा।

प्रस्तावना – गोंड जनजाति भारत के सबसे बड़ी जनजाति है। गोंड जनजाति का इतिहास गोंडवाना राज्य से संबंधित है। गोंडवाना राज्य की रानी दुर्गावती की वीर कथाएं महाकौशल और बुंदेलखंड क्षेत्र के अचलो मैं अभी भी सुनी जा सकती है। गोंड जनजाति में द्रविड़ियन प्रजाति के गुण मिलते हैं और उनकी भाषा में दक्षिण भारत की तेलुगु भाषा के शब्द मिलते हैं।ऐसा माना जाता है कि हिंदू साम्राज्य की समाप्ति के बाद 14वीं शताब्दी के लगभग मध्य प्रदेश के वन-जंगलो व पठारों में संभावित दक्षिण की ओर से गोदावरी की घाटी में गोंड जनजाति के लोग आकर बसे।गोंडजनजाति एक प्रभुताशाली जनजाति के रूप में पहचानी जाती है।

जनजाति की परिभाषा:

1. **इम्पीरियल गजेटियर के अनुसार –** 'एक जनजाति समान नाम धारण करने वाले परिवारों का संकलन है, जो समान बोली बोलते हैं, एक क्षेत्र से संबंधित होते हैं एवं सामान्यत: ये समूह अंतर्विवाही होते हैं।'
2. **राल्फ लिंटन के अनुसार–** 'सरलतम रूप में जनजाति ऐसी टोलियों का एक समूह है, जिसका एक सानिध्य वाले भूखण्ड अथवा भूखण्डों पर अधिकार हो और जिनमें एकता की भावना, संस्कृति में गहन सामान्यत: निरंतर संपर्क तथा कतिपय सामुदायिक हितों में समानता से उत्पन्न हुई हो।'
3. **हॉबल के अनुसार –** 'एक जनजाति एक सामाजिक समूह है जो एक विशेष भाषा बोलता है तथा एक विशेष संस्कृति रखता है जो उन्हें दूसरे जनजाति समूहों से पृथक करते हैं यह अनिवार्य रूप से राजनीतिक संगठन नहीं है।'
4. **गिलिन और गिलिन के अनुसार –**'स्थानीय जन समूहों का ऐसा समुदाय जनजाति कहलाता है जो एक सामान्य क्षेत्र में निवास करता है तथा जिसकी एक समान संस्कृति होती है।'
5. **डी. एन. मजूमदार–** ने भारतीय परिवेश में जनजाति की परिभाषा देते हुए कहा है कि किसी भी जनजाति परिवारों तथा पारिवारिक वर्गों का ऐसा समूह है, जिसका अपना एक सामान्य नाम है, जिसके सदस्य एक निश्चित भू-भाग पर निवास करते हैं, एक सामान्य भाषा का प्रयोग करते हैं, विवाह, व्यवसाय सम्बन्धी कुछ नियमों का पालन करते हैं तथा एक सुनियोजित आदान-प्रदान करते हैं।

गोंड जनजाति से संबंधित साहित्य का अध्ययन:

- डॉ. हरिशचन्द्र उत्प्रेती(1982) इन्होने अपने शोध प्रबंध भारतीय जनजातियाँ में बताया कि गोंड़ आज के विज्ञान के युग में भी अधिकांशत: प्रकृति पर ही आश्रित है। जंगलों तथा पहाड़ों से खाद्य संग्रह करना, नदियों तथा तालाबों में मछली पकड़ना तथा कही-कही घटियों या अनेक पहाड़ी क्षेत्रो पर कृषि करना ही उनके आजीविका के प्रमुख साधन रहें है। अत: आधुनिक तौर तरीके बरतने वाले तथा सभ्य कहे जाने वाले लोगां की अपेक्षा सभ्यता की दौड़ में पिछली समझे जाने वाली जातियों का सामाजिक एंव आर्थिक जीवन भौगोलिक पर्यावरण के प्रत्यक्ष प्रभाव से ओत-प्रोत है। पर्यावरण के अनुसार ही उनका जीवन व्यतीत होता रहा है। जनजातीय जीवन को प्रकृति से लगातार संघर्ष करना पड़ता है और उदर पूर्ति के लिए कठोर परिश्रम करना पड़ता है।
- डॉ. के. के. शर्मा (1989) इन्होने अपने शोध प्रबंध 'अनुसूचित जनजातियों में सांस्कृतिक परिवर्तन' में शहडोल जिले की चार प्रमुख जनजातियों, गोंड, बैगा, पंका, अगरिया के सांस्कृतिक पक्षों में होने वाले परिवर्तनों की विस्तृत व्याख्या की है।
- दीप मिश्रा (2003) इनके द्वारा अप्रकाशित लघु शोध कार्य में कोल जनजाति में सामाजिक, सांस्कृतिक परिवर्तन के अन्तर्गत कोल जनजाति में पाये जाने वाले परिवर्तनों एवं आधुनिकीकरण के बारे में विस्तार से बताया है।
- श्री कमल शर्मा, 2015, पृ.111गोंड जनजाति का इतिहास गोंड जनजाति गोंडवाना राज्य से संबंधित है गोंडवाना राज्य की रानी दुर्गावती की वीर कथाएं महाकौशल और बुंदेलखंड क्षेत्र के चलो मैं अभी भी सुनी जा सकती है। गोंड जनजाति में द्रविड़ियन प्रजाति के गुण मिलते हैं और उनकी भाषा में दक्षिण भारत की तेलुगु भाषा के शब्द मिलते हैं।

1. **प्रजातिय तत्व –** गॉड जनजाति के लोगों में द्रविडियन प्रजाति के लक्षण दिखाई देते हैं। शरीर का का कद मध्यम आकार का होता है, त्वचा का रंग काला, चेहरा चपटा, नाक चपटी व मोटी, मोटे होंट, दाढ़ी मूछ में कम बाल

होते है।

2. **खानपान एवं पहनावा** –गोंड जनजाति के लोग कोदू–कुटकी, गेहूं, चावल और समई जैसे अनाज को प्रमुखता से भोजन में शामिल करते हैं। गोंड जनजाति के लोग शाकाहारी एवं मांसाहारी दोनों ही होते हैं यह शराब का सेवन भी करते हैं। गोंड जनजाति में परंपरागत रूप से पुरुष घुटने तक धोती, सर पर पगड़ी कंधे पर पिछौरा डालते हैं। महिलाएं रंगीन सूती साड़ी पहनती है। वर्तमान समय में आधुनिकता एवं नगरीकरण के कारण इनके खान–पान व पहनावे में परिवर्तन आया है।

3. **अर्थव्यवस्था** –गोंड जनजाति का मुख्य व्यवसाय कृषि व्यवसाय हैं। इसके अलावा वन उपज भी जीविका का साधन है। महिला पुरुष बराबरी से काम करते हैं। शासन के कई योजनाओं का लाभ भी लेते हैं आज के समय में गोंड जनजाति के लोग शिक्षित होकर कई उच्च पदों पर पदस्थ है किंतु कई जगह आज भी जागरूकता की कमी के कारण गोंड जनजाति के लोग कई योजनाओं का लाभ नहीं ले पाते हैं जिससे वह आज भी समाज की मुख्य धारा से जुड़े हुए नहीं है।

गोंड जनजाति का अध्ययन करने के बाद अंतरू यह उपयुक्त विवेचन मिलता है कि मध्य प्रदेश की गोंड जनजाति गरीबी, शिक्षा और तकनीकी ज्ञान के अभाव के कारण कई सारी योजनाओं का लाभ नहीं ले पाती है। गोंड जनजाति के लोग अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं है जिसके कारण जंगलों के ठेकेदार व्यापारी आदि इन लोगों का फायदा उठाते हैं।

1. **सांस्कृतिक पक्ष** –सांस्कृतिक पक्ष गोंड जनजाति के लोक कला प्रेमी होते हैं, पारंपरिक रूप से गोदना गुन्दवाना और अपने घरों की दीवारों पर पारंपरिक कला चित्र बनाते हैं जैसे चांद, वृक्ष, पक्षीव सूरज आदि। गोंड जनजाति में शैली नृत्यव करमा नृत्य किए जाते है।

2. **धार्मिक विश्वास**–गोंड जनजाति में देवी–देवताओं की पूजा का प्रचलन है जैसे बड़ा देव, ठाकुर देव, नारायण देव, दर्शन देव, शारदा माईव खेत में नागेश्वर देव आदि। गोंड जनजाति प्रकृति के उपासक है जैसे जल, अग्नि, वृक्ष, पक्षी,चांदवसूरज इन सब की पूजा की जाती है।

3. **पर्व त्यौहार** –गोंड जनजाति में पर्व त्यौहार बड़ी हर्षोल्लास के साथ मनाए जाते हैं पर्व में सामाजिक–आर्थिक जीवन की झलक दिखाई देती है। गोंड जनजाति में पर्व–त्योहार पारंपरिक रूप से मनाए जाते हैं जिसमें हैं बिदारी पूजा, जवारा, मड़ई, छेरता, हर ढीली, बागबंदी, नवाखानी।

4. **विवाह संस्कार** – जनजातियों में विवाह केवल वंश की वृद्धि के लिए नहीं रचाए जाते बल्कि विवाह आदिम समाज में प्रेम, स्नेह, परस्पर सहयोग एवं सहज आर्कषण की अभिव्यक्ति का प्रतीक होता है। गोड जनजातियों में पहले बाल विवाह का प्रचलनथा, किन्तु अब यह प्रथा कम हो गई है। विवाह के लिए लड़के की आयु 15–16 वर्ष और लड़की 13–14 वर्ष है।

- **विवाह** –गोंड जनजाति में विवाह की विविध विधियो का प्रचलन है। गोंड जनजाति में बाल–विवाह का प्रचलन है। गोंड जनजाति में दूध–लौटावा विवाह का प्रचलन है, जिसमें ममेरे–फुफेरे भाई–बहनों का विवाह करवा दिया जाता है।
- **नियमित विवाह**– यह एक प्रकार का सामान्य विवाह है जिसमें पारंपरिक रूप से विवाह करवाया जाता है।
- **लमसना या सेवा विवाह** – इस विवाह में विवाह से 3 वर्ष पूर्व व्यक्ति अपने ससुराल के निर्धारित कार्य करता है जिससे की जीविका उपार्जन हो सके।इस समय अवधि में यदि लड़की के पिता को व्यक्ति का कार्य संतोषजनक लगता है तो वह उसका विवाह कर देता है।
- **विनिमय विवाह** – वह विवाह है जिसमें दो परिवारों का आपस में आदान–प्रदान या आटा–साटा विवाह करवाया जाता है। जिसमें एक पक्ष से पुत्री का विवाह किया जाता है तो दूसरे पक्ष से पुत्रवधू विवाहकर लाई जाती है।

1. **जन्म संस्कार गोंड जनजाति** – जनजाति में पुत्र–पुत्री को समभाय की दृष्टि से देखा जाता है। गर्भधारण के लक्षण दिखते ही कुल देवी–देवता का पूजन कर उत्सव मनाया जाता है। शिशु जन्म के बाद गाँव की महिलाएँ पारम्परिक गीत सोहर व दादरे रात्रि के समय गाती है।

2. **मृत्यु संस्कार गोंड** – पुर्नजन्म पर विश्वास नहीं करते इसलिए स्वर्ग और नरक की धारणा भी गोंडों में बहुत कम है। ये केवल देव योनि और भूतयोनि मानते हैं। गोंड समाज में ऐसी मान्यता है कि देव–देवताओं पूजा करने से मृतक की आत्मा देवत्व प्राप्त करती है। मृत्यु के बाद शय को दफनाया जाता है वहीं सम्पन्न व्यक्ति को जलाया जाता है। ये जनजातियों सूरज, चाँद, बादल, बिजली व वर्षा आदि के प्रति आस्थावान हैं। इनका कोई धार्मिक ग्रन्ध नहीं है, फिर भी अपने धर्म को पूरी निष्ठा और आस्था से निभाते है। गोडों को अपने देवी देवताओं पर अटूट विश्वास है। गोंड जनजातियों की कला परम्परा,गोंड जनजाति के समाज में जितना महत्य धर्म और संस्कृति का है उनके जीवन में कला का भी उतना ही महत्तवपूर्ण स्थान है, क्योंकि उनकी कला उनकी संस्कृति का एक अंग है।

3. **बोली** –बोली गोंड जनजाति में गोंडी बोली जाती है, जो द्रविड़ भाषा परिवार से संबंधित है। कुछ गोंड उप जातियां मोरिया गोंडी के अलावा हलवी बोली का प्रयोग करते हैं।

4. **गोंडजनजाति की संस्कृति** – संस्कृति मनुष्य जाति के शाब्दिक एवं अशाब्दिक व्यवहार और उसके भौतिक व अभीतिक प्रतिफलों का योग है। किसी भी देश व समाज की संस्कृति उसकी जीवन शैली, रहन–सहन, रीति–रिवाज, बोली–भाषा, धर्म आदि को समझाने का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण साधन है। जिसके माध्यम से हमें किसी क्षेत्र में निवास करने वाले मानव समूहों की जीवन शैली व कला परम्परा का ज्ञान प्राप्त की महिलाएँ लुगड़ी (साड़ी) धारण करती हैं। इनको गहनों से अधिक लगाय है, इनके परम्परागत् आभूषणों में जुरिया, हलेम, ढार, झरका, टरकी, बारीव टिकूसी आदि।

5. **गोंड जनजातियों की कला परम्परा**– गोंद जनजाति के समाज में जितना महत्त्व धर्म और संस्कृति का है उनके जीवन में कला का भी उतना ही महत्त्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि उनकी कला उनकी संस्कृति का एक अंग है। गोंड समाज में लोक कलाओं का विशेष महत्त्व है जिसने नृत्य कला, संगीत कला, चित्र कला व गुदना कला आदि प्रमुख हैं।

गोंडजनजातियों के द्वारा किए जाने वाले प्रमुख नृत्य है जिनमें करमा नृत्य कर्म की प्रेरणा प्रदान करने वाला नृत्य है इसमें श्रम का विशेष महत्त्व है, श्रम को ये करम देवता के रूप में मानते हैं जिनकी पूजा के अवसर पर यह नृत्य किया जाता है। इसके अतिरिक्त सैला, सुआ नृत्य, सजनी, दीवाली नृत्य, बिरहा आदि लोक नृत्य है। नृत्यों के साथ–साथ गीत–संगीत, कहानी कहावतें प पहेलियां आदि गोंड जनजाति के याचिक (बोली) परम्परा का प्रमुख अंग है जिसके माध्यम से इनके जीवन से जुड़े सम्पूर्ण संस्कृति का ज्ञान होता है।

भित्ति अलंकरण – गोंड कला संस्कृति एवं परम्परा का एक अन्य स्वरूप

उनके घरों की दीवारों पर अलंकृत भित्ति चित्रों के माध्यम से देखने को मिलता है। गोंड जनजातियों के घर कलात्मक रूप से बने होते हैं घर बनाने में गोड महिलाएं अधिक कुशल होती हैं। घरों की दीवारों के किनारों पर मिट्टी से तह बनाकर उस पर अनेक प्रकार की डिजाइने जिसमें प्राय: त्रिभुजाकार वृत्ताकार व ऊभरी हुई

शोध विधि – इस शोध में तथ्यों का संकलन द्वितीयक स्त्रोतों से किया गया है तथ्यों के स्त्रोत–पत्रिकाएं एवं अभिलेख तथा विभिन्न प्रकार के महत्वपूर्ण समाचार पत्र, पुस्तकें व आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी इण्टरनेट आदि से लिया गया है। यह शोध वर्णनात्मक एवं व्याख्यात्मक शोध अभिकल्प पर आधरित है।

निष्कर्ष और सुझाव – गोंड जनजाति की कला एवं संस्कृति का विस्तार पूर्वक उल्लेख किया गया है गोंड जनजाति की ऐतिहासिक एवं संस्कृति की झलक उनके सामाजिक जीवन में दिखाई देती है अपनी संस्कृति, परंपरा एवं ऐतिहासिक धरोहर को आदि काल से ही सहज कर कर रखा है। वर्तमान समय में भी अपने संस्कृति और सभ्यता को जीवंत बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:–

1. शर्मा, श्रीनाथ, 2014, जनजातीय समाजशास्त्र मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्ध अकादमी, भोपाल।
2. उपाध्याय, विजय शंकर 2009 भारत की जनजातीय संस्कृति मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।
3. श्रीवास्तव, ए. आर. एन., 2007, जनजातीय भारत, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।
4. श्रीवास्तव, ए. आर. एन., 2012, जनजातीय संस्कृति, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।
5. दीक्षित, ध्रुप कुमार, 2010, पातालकोट घाटी का भारतीय जनजीवन, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

****